जीवन में संस्कारों से होती है व्यक्ति की पहचान

जीवन में अच्छे संस्कारों से अच्छे इंसान की पहचान की जाती है। दूसरी ओर हम यह कह सकते हैं कि अच्छे संस्कार बेहतर जीवन की नींव होते हैं। मानव जीवन में सबसे पहले दृश्य होने वाले भाव उसके संस्कार ही होते हैं। सरल शब्दों में कहें, तो संस्कार बिन मनुष्य पशु समान है। अच्छे बुरे का भेद हमें संस्कारों से ही पता चलता है। बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं वे सब संस्कारों की श्रेणी में फलता फूलता है। अच्छे संस्कार बेहतर कल का निर्माण करने में सहायक होते हैं। वास्तविकता पर प्रकाश डाला जाए, तो हमें ज्ञात होगा कि हमारे हर एक कार्य पर संस्कारों की छवि झलकती है। फिर चाहे वह कार्य छोटा हो या बड़ा, हमारा हर आचरण हमारे संस्कारों को ही दर्शाता है। भला ऐसे कौन से माता–पिता होंगे, जो अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों से हीन देखना चाहते होंगे?

शिवालिक अवस्थी
लेखक

बचपन से ही दें अच्छी परवरिश

हम बात तो यहां अच्छे संस्कारों की कर रहे हैं, लेकिन बचपन से ही अच्छे संस्कारों का समावेश कैसे किया जाए यह बात ध्यान देने योग्य है। आईए इस पर थोड़ा प्रकाश डालते हैं। बच्चों में अच्छे संस्कारों का सृजन माता-पिता द्वारा जीवन के शुरुआती दौर में ही कर देना चाहिए। बढ़ती उम्र के साथ बच्चों को हर एक संस्कार से रूबरू करवाना माता-पिता का कर्तव्य समझा जाता है। हर कार्य को सही ढंग से पूर्ण करना चाहिए, जिसके लिए बच्चों को अच्छे-बुरे की पहचान होना अनिवार्य हो जाता है। कौन सा कार्य अच्छा है और कौन सा कार्य बुरा है यह संस्कारों के अधीन ही समझा जाता है। सुबह उठते ही बच्चों द्वारा अपना बिस्तर समेटना, उनके संस्कार को दर्शाता है। दिनचर्या के कार्यों को सही ढंग से पूर्ण करना, संस्कारों की श्रेणी में आता है। भोजन कैसे ग्रहण किया जाता है यह भी संस्कारों में शामिल किया गया है।

अच्छे संस्कारों के कारण बच्चे अपने रोजमर्रा के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में सक्षम बन जाते हैं। सही ढंग से भोजन ग्रहण करना सीख जाते हैं। बेहतर संस्कारों के कारण ही बच्चे, बड़ों का आदर सम्मान करना सीख जाते हैं। बच्चों को अच्छाई-बुराई का बोध भी अच्छे संस्कारों के कारण ही होता है। कौन सा कार्य करना उचित है और कौन सा अनुचित यह बच्चों को संस्कारों के ग्रहण करने से ज्ञात हो जाता है। आज के इस युग में कई जगह देखा जाता है कि बच्चों के जीवन से संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं, जिस कारण बच्चों द्वारा कार्य करने के तरीके भी बदल चुके हैं। अब बच्चे बिना मोबाइल के भोजन तक ग्रहण नहीं करते हैं, जो सरासर गलत है। नतीजन भोजन पाचन क्रिया में कठिनता नजर आने लगी है। कई बच्चे तो एक ओर टीवी अथवा मोबाइल को देखने के लिए लेटे होते हैं, तो दूसरी ओर वह भोजन भी ग्रहण कर रहे होते हैं। अब इस क्रिया में बच्चों का पेट कैसे भरेगा और भोजन कैसे पचेगा यह समझ से परे है। नतीजन मोटापे या कुपोषण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

दूसरी ओर बच्चों में यदि संस्कार अच्छे होंगे, तो बच्चे भी बड़े-बुजुर्गों के साथ बैठकर आराम से भोजन ग्रहण करेंगे, जो जीवन में अति आवश्यक भी है। आजकल ज्यादातर बच्चों ने अपने से बड़ों के पांव छूकर आशीर्वाद लेने का महत्व भी खो दिया है। बच्चों को चाहिए कि वे रोज सुबह उठकर अपने माता-पिता के पांव छूकर स्कूल जाएं। स्कूल में अपने गुरुजनों का आशीर्वाद लिया जाए। अथवा घर में कोई मेहमान आए, तो उसके भी पांव छूकर आशीर्वाद लिया जाए। यह क्रियाएं नैतिक संस्कारों की श्रेणी में आती हैं, जिनका प्रभाव जीवन भर रहता है। जीवन में स्वछता को अपनाना भी संस्कार माना गया है। इसलिए बच्चों को स्वछता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। स्वछता के अलावा सुबह जल्दी उठना, रात को जल्दी सोना भी बच्चों के विशेष संस्कारों में सम्मिलित होना चाहिए। स्कूल की बात करें, तो बच्चों को अपने गुरुजनों का सदैव सम्मान करना चाहिए। अपने गुरु के कहे शब्दों को ध्यानपूर्वक ग्रहण करना चाहिए। स्कूल के नियमों का पालन करना चाहिए और नियमों का पालन वही विद्यार्थी कर सकता है, जिसके भीतर संस्कारों का बीज अंकुरित किया जा चुका हो।

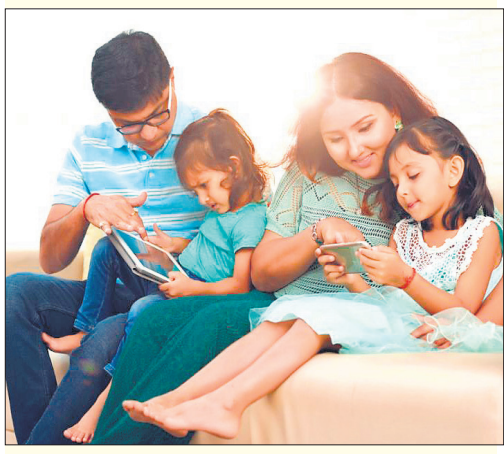

मोबाइल से बच्चों को दूर रखें

आज के समय में बच्चों में संस्कार मानो लुप्त होते जा रहे हैं। बच्चे चिड़चिड़ेपन का शिकार होते जा रहे हैं। बच्चे घर में आए मेहमानों से मिलने को कतराते हैं। अकेलेपन को ज्यादा पसंद करने लगे हैं। मोबाइल से ज्यादा लगाव लगाकर बैठे हैं। मानो बच्चों ने अपना बचपन ही बेच दिया हो। दुनिया की इस चकाचौंध में बच्चे अपना बचपन खो बैठे हैं। अब जरूरत है, तो बच्चों के खोए हुए बचपन को लौटाने की, जिसमें संस्कार अपनी विशिष्ट भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों में ऐसे संस्कार निहित होने चाहिए, जिनसे वह जीवन का मूल मकसद समझ सकें। माता-पिता और गुरु यह तीन ऐसे मजबूत स्तंभ हैं, जो बच्चों में संस्कारों का निर्माण करने में सक्षम होते हैं। बच्चों के जीवन की नींव इन्हीं तीन स्तंभों पर टिकी होती है। बाहर हर बच्चा अक्सर वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वह घर के वातावरण से सीखता है, इसलिए विशेष रूप से माता-पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चों में संस्कारों की ऐसी पैदावार करें, जो जीवनपर्यंत बच्चों के लिए फलदायक साबित हो।

...फिर जिले में कभी तैनाती नहीं ली

आपबीती

बात है वर्ष 1986 की, जिला बुलंदशहर में सीओ अनूप की तैनाती के तीन महीने में कप्तान साहब ने मेरे कार्यक्षेत्र के पांच थानों में फेरबदल करते हुए दो छोटे थाने हटाकर दो बड़े थाने पकड़ा दिए। अब अलीगढ़ सीमा से मुरादाबाद (अब अमरोहा जिला) सीमा तक गंगा किनारे का बड़ा इलाका पुलिसिंग के लिए मिल गया। नए मिले थानों के बारे में ब्रीफ किया गया कि साल के शुरुआती ढाई महीने में ही डकैती के एक दर्जन से अधिक मामले दर्ज हो चुके हैं और मेरे इलाके में अपराध कमोबेश कंट्रोल में है। नए लड़के हैं, जाकर इस इलाके में कंट्रोल कीजिए। उसी शाम एक कोतवाली पर पंहुचकर उपनिरीक्षकों से अपराध के बारे में चर्चा की। इंस्पेक्टर को क्राइम कंट्रोल मे विफल रहने के कारण हरिद्वार कुंभ मेला ड्यूटी भेज दिया गया था। बचे थाना पर तीन–चार नए और तीन पुराने दारोगा।

पुरानों दारोगाओं में सीनियर इंचार्ज पी. पी. सिंह शांत स्वभाव के और दिनभर मेहनत करने वाले अफसर थे। दूसरे यादव जी थे, लिखा-पढ़ी में इतने माहिर कि तफ्तीश में कोई भी नतीजा लिख दें, उसमें कमी निकाल पाना आसान नहीं होता था। तीसरे खुर्शीद गौहर-50 से ऊपर की उम्र में सुंदर व शालीन व्यक्तित्व के मालिक, उतनी ही नफासत भरी बातचीत, मानो पश्चिमी उप्र में लखनऊ उतर आया हो। सेवा में नए होने के कारण पूरी गंभीरता से डकैतियों की रोकथाम की कार्ययोजना के बारे में पूछने पर जनाब खुर्शीद गौहर साहब ने लखनवी अंदाज में फरमाया- 'हुजूर! अब आप का हुक्म है, तो नहीं पड़ेंगी।' मेरी जिज्ञासा पर उन्होंने बतलाया- 'साहब! मेहनत से गश्त की जाएगी। मुखबिरान मामूर (सक्रिय) किए जाएंगे। माशाल्लाह! आप भी जवान हैं, रात भर इलाके में घूमते ही रहते हैं। डकैती की क्या मजाल, जो पड़ जाएगी।'

इसके बाद अगले दो-ढाई महीनों तक उन नए थानों में डकैती तो दूर, चोरी-नकबजनी पर भी मानो ब्रेक सा लग गया। मासिक क्राइम मीटिंग में कप्तान साहब जब कहते कि नया लड़का है, कैसे क्राइम कंट्रोल कर रखा है, तो सीना खुद-ब-खुद चौड़ा हो जाता। इस बीच मंडल के डीआईजी साहब भी शाबासी दे गए। कुछ ही दिन बाद उसी थाना क्षेत्र के एक उभरते युवा नेता अपने शस्त्र लाइसेंस के प्रार्थना पत्र पर संस्तुति कराने के सिलसिले में मिलने आए। मैं खाली बैठा था, सो बातचीत का सिलसिला निकल पड़ा। बातों-बातों में नेताजी ने उक्त थाने के कामकाज की तारीफ करते हुए जो कहा, उसने मेरे पैरों तले से जमीन हिला दी। उन्हीं के शब्दों में-'साब, जबसे आपने हमारे थाने को संभाला है, पुलिस इतनी मेहनत कर रही है कि पूछिऐ मत। पहले तो रात में निकलता ही नहीं था कोई। अभी हाल में फलाने गांव मे डाका पड़ा, इतनी मेहनत करी पुलिस ने और पिछले महीने ढिमके गांव में डकैती पड़ी, साब, कितनी मेहनत की पुलिस वालों ने। गजब का सुधार हुआ है, आप के आने से...' अब मुझे काटो तो खून नहीं। उन्हें विदाकर अपने बुजुर्ग पेशकार ओमप्रकाश सिंह तोमर को बुलाकर नेताजी की तारीफ के बारे में बतलाते हुए चिंता व्यक्त की। पेशकार बहुत अनुभवी थे। उन्होंने कहा कि कोई शिकायत तो नहीं आई है सर। ऊपर के अफसर भी कहां चाहते हैं कि क्राइम बढ़े। जब कोई शिकायत आएगी, तब कार्रवाई कर दीजिएगा।

मुझे परेशानी से उबरता न देखकर पेशकार साहब ने विभाग का रहस्य बतलाया कि सरकार से थानेदार तक कोई नहीं चाहता कि अपराध बढ़ता दिखाई दे। सब आंकड़ों का खेल है। अपराध के आंकड़े बढ़ने पर विपक्ष सरकार को घेर लेती है और सरकार अफसरों को। थानेदार लूट-डकैती नहीं लिखता है। अफसरों की नौकरी बचाने के लिए और चोरी-नकबजनी नहीं लिखता है, अपनी थानेदारी बचाने के लिए, लेकिन सच यह है कि डकैती न लिखने पर भी मौके पर सारी कार्रवाई का दिखावा करना पड़ता है, अपराधी भी पकड़े जाते हैं, बस उन्हें डकैती के बजाय डकैती की योजना बनाते हुए पुलिस मुठभेड़ में तमंचा आदि के साथ पकड़कर बंद कर दिया जाता है। फिर उनकी पिटाई कर इतनी दहशत भर दी जाती है कि वह महीनों जमानत नहीं कराते। अभी जो बदमाश मुठभेड़ में मारे गए हैं, वह सभी शातिर लुटेरे हैं। बाकी क्राइम कंट्रोल मिमिमाइजेशन (अपराध को हल्के धाराओं में दर्ज करना) और कंसीलमेंट (अपराध को बिल्कुल न लिखना) पर ही चल रहा है पूरे सूबे में। इसके बाद मेरे ज्ञान चक्षु खुल गए और मैंने कभी जिला पुलिस में तैनाती के लिए कोशिश नहीं की और नौकरी का बड़ा हिस्सा इंटेलिजेंस, विजिलेंस और सुरक्षा में बिताकर आज से साढ़े आठ साल पहले रिटायर हो गया।

-अरुण गुप्ता
पूर्व आईपीएस, उप्र

लव बर्ड्स

वो दोस्त जो जीवनसाथी बन गया

दोस्ती-एक ऐसा रिश्ता जो धीरे-धीरे जीवन की सबसे मजबूत नींव बन जाता है। कुछ ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ। मुझे आज भी याद है, 2009 की बात है, जब मैं केमिस्ट्री की कोचिंग कर रही थी। हमारी क्लास में एक लड़का था, हमेशा शांत, विनम्र और पढ़ाई में अव्वल। वहीं मैं स्वभाव से काफी चंचल थी। हमारी कोचिंग के दिनों में हम दोनों के बीच लगभग कोई बातचीत नहीं होती थी। कोचिंग पूरी होने के बाद मैं बीएससी करने चली गई और वह भी अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गया। अचानक एक दिन हमारी मुलाकात हुई और वहीं से हमारी दोस्ती की शुरुआत हुई। समय के साथ यह दोस्ती गहरी होती गई और हम अपनी छोटी-बड़ी सभी बातें एक-दूसरे से साझा करने लगे।

इसी दौरान मेरी बड़ी बहन, जिन्हें ब्रेन ट्यूमर था, उनका ऑपरेशन दिल्ली के एम्स में होना था। उस समय मेरे साथ केवल दो बहनें थीं-एक जो बीमार थीं और दूसरी जो मेरा सहारा बनी हुई थीं। वहां छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी हमें कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। यह बात मैं अक्सर अपने दोस्त से साझा करती थी। शायद उसे महसूस हुआ कि हम वहां अकेले संघर्ष कर रहे हैं, इसलिए उसने अपने घर पर झूठ बोलकर दिल्ली पहुंचने का फैसला कर लिया। दिल्ली पहुंचकर उसने मेरी बड़ी बहन के साथ मिलकर सारा काम संभाल लिया। ऑपरेशन सफल रहा और मेरी बहन पूरी तरह ठीक हो गई। इस घटना के बाद हमारी दोस्ती और मजबूत हो गई। वह मेरे घर आने-जाने लगा और देखते ही देखते हमारे परिवार का एक अभिन्न हिस्सा बन गया। इसी बीच मेरे शादी के रिश्तों की बातचीत भी चल रही थी। घर में पापा की सबसे छोटी और सबकी लाडली होने के कारण सभी मेरे लिए बेहतर से बेहतर रिश्ता ढूंढने में लगे थे। लेकिन मेरे मन में लगातार एक डर था कि कहीं मेरा विवाह ऐसी जगह न हो जाए जहां मैं अपनी तरह से जीवन न जी सकूं। कई रिश्ते आते-जाते रहे, और मैं लगातार उलझन में डूबी रही। एक दिन, इसी उधेड़बुन में, मैंने अपने दोस्त से पूछा-"अगर तुम्हारे जीवन में कोई और नहीं है। तो क्या तुम मुझसे शादी करोगे?"

वह कुछ क्षणों के लिए सक्त रह गया। फिर बोला- "मुझे थोड़ा समय दो मैंने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं।" मैंने उसका उत्तर पाने के लिए इंतजार किया। मगर हमारे बीच एक बड़ी बाधा थी-जाति। वह ठाकुर था और मैं कायस्थ। कई उतार-चढ़ाव आए, कई बार स्थितियां मुश्किल हुईं, लेकिन अंततः हमने हिम्मत दिखाई। मैंने अपने परिवार को और उसने अपने परिवार को इस रिश्ते के लिए मनाया। लंबी कोशिशों और अनेक भावनात्मक संघर्षों के बाद, 22 फरवरी 2022 को हमारी शादी धूमधाम से संपन्न हुई। आज भी हम पहले की तरह ही अच्छे दोस्त हैं। हमारी दोस्ती ही हमारा सबसे मजबूत रिश्ता है-वही दोस्ती जो सम्मान, भरोसे और साथ से पति-पत्नी के सुंदर बंधन में बदल गई।

-आशीष एवं नैंसी श्रीवास्तव, अयोध्या।